ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०७
दिनांक– शुक्रवार, 22 जनवरी, 2021

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 18.3 एवं 8.0 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 91 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 65 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.5 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाष अवधि औसतन 3.1 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 13.5 एवं दोपहर में 18.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(23–27 जनवरी, 2021)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 23–27 जनवरी, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–
- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। अगले २–३ दिनों तक पछिया हवा चलने से ठंड की स्थिति बनी रहेगी। उसके बाद पुरवा हवा चलने से ठंड में कमी आने की सम्भावना है। सुबह में मध्यम से घना कुहासा छा सकता है।
- पूर्वानुमानित की अवधि अधिकतम तापमान 19 से 22 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 9 से 11 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 7 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो–तीन दिनों तक पछिया हवा तथा उसके बाद पूरवा हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- समय से बोयी गई गेहूँ की 40 से 50 दिनों की फसल में दूसरी सिंचाई एवं अगात बोई गई गेहूँ की फसल जो 60 से 65 दिनों की हो गई है, उसमें तीसरी सिंचाई के लिए इंतजार कर सकतें हैं।
- मक्का की फसल में आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। सिंचाई के बाद 25–30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें, जिससे कम तापमान तथा शीतलहर के प्रभाव से फसल पर हुए नुकसान को कम किया जा सके।
- पिछात फूलगोभी, पत्तागोभी, गाजर, मूली, मटर,बैंगन, टमाटर एवं मिर्च फसलों में निराई–गुराई एवं सिंचाई करते रहें। इन फसलों में रोग–व्याधि से बचाव हेतु कार्बेन्डाजीम (वेविस्टीन)/ 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर समान रुप से छिड़काव करें। गरमा सब्जी की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेष कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाष फंदा का उपयोग करें। 15–20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई0 सी0 या नोवाल्युरॉन 10 ई0 सी0 का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- आलू की फसल में पिछेती झुलसा रोग के फैलाव के लिए अनुकूल है। कृषक भाई फसल की नियमित रुप से निगरानी करें। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व षिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पुरा पौधा झुलस जाता है। इसके बचाव हेतु 2.0 से 2.5 ग्राम इण्डोफिल एम0 45 फफूँदी नाषक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। इस छिड़काव के 8–10 दिनों बाद पुनः रीडोमिल दवा का 1.5 से 2.0 ग्रम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। कटवर्म या कजरा पिल्लू कीट का प्रकोप फसल में दिखनें पर बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 से 3 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें। यह कीट आलू में काफी हानी पहुचाता है। फसल की शुरुआती अवस्था में यह कीट रात्री बेला में जमीन की सतह से पौधे को काट डालता है। फसल के बाद की अवस्था में यह पौधे की षाखाओं एवं पत्तियों को काटता है। कंद बनने की अवस्था में यह कंद को खाता है। इस कीट का प्रकोप फसल में दिखनें पर बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 से 3 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से से घोल बनाकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- पशुपालक भाई दूधारु पशुओं के रख–रखाव एवं खान–पान पर विषेश ध्यान दें। हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से 50 ग्राम नमक, 50 से 100 ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। दुधारु पशुओं के दूध उत्पादन में आयी कमी को दूर करने के लिए नियमित रुप से कैल्सियम की सूई दिलायें अथवा तरल कैल्सियम खिलायें।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित रुप से निगरानी करे। यह सुक्ष्म आकार का कीट पौधो के सभी मुलायम भागो–तने व फलीयों का रस चुसते है। ये कीट मधु–स्त्राव निकालते है, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह–जगह काले धब्बे दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों में शाखाएँ कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सुखने लगते है। फलीयॉ कम लगती है तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- गरमा सब्जी की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। स्वस्थ एवं अच्छी उपज के लिए जुताई से पूर्व खेतों में प्रति हेक्टेयर 15–20 टन गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट का व्यवहार करें।

आज का अधिकतम तापमानः 16.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 6.5 डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः 8.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य के बराबर

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी